Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 5440176

Roll No. 24029000612
Total Mark 57/75.00

Exam MASTER OF ARTS HINDI_ODD EXAM-DEC-24
Subject A010702T - SAHITYALOCHAN

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	4/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2	NA/15						
3	NA/15						
4	10/15						
5	NA/15						
6	11/15						
7	NA/15						
8	NA/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-II

Date of Exam: 24-12-24 Shift: I Room No.: 21
Paper Code: A010702T Subject: Hindi Year/Sem: I-Sem
Name of Candidate: SAHASTRANSHU MISHRA
Roll No.: 2 4 0 2 9 0 0 0 6 L 2

Signature of Candidate | Signature of Invigilator | COE Facsimile

MARKS OBTAINED										
Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A O 1 0 7 0 2 T
Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: M.A. HINDI
Session: 2024-25 Year/Semester: I
Subject Name: Hindi
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A O L O 7 O 2 T

Exam Date: 24 1 2 2 0 2 4

Name of Candidate: SAHASTRANSHU MISHRA

Father's Name: KAMLESH KUMAR

महाविद्यालय का कोड
College Code: K N 0 L

परीक्षा केंद्र का कोड
Exam Centre Code: K N 0 L

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● | भूतपूर्व छात्र Ex-Student ○
व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
5440176

A O L O 7 O 2 T
Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या
Enrollement Number: C S J M A 2 4 0 0 0 1 1 9 5 6 8

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 2 9 0 0 0 6 L 2

पेपर कोड Paper Code: A O L O 7 O 2 T

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken thecircles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ⊗ ◉ ◐

4. Make no Stray marks o n this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों को दिशा निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ की दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठो पर दोनो तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त कागज नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script. If found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	6	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code

खण्ड-अ

लघु उत्तरीय प्रश्न

1(A)

आलोचना पद्धति -

आलोचना का अर्थ भली प्रकार से देखना होता है। आलोचना शब्द का निर्माण 'लोच' धातु से हुआ है।

समय-समय पर रचनाकार नवीन साहित्य का सृजन करते रहते हैं तथा आगे आने वाले साहित्यकार उनके प्रत्यक्ष में प्रेरणा पाते हैं एवं विवेचना का गुण भी उत्पन्न कर पाते हैं।

यही विवेचना जब और अधिक परिष्कृत रूप ग्रहण करती है तब यह आलोचना एवं समालोचना का साज पहनकर साहित्यानुरागियों की मस्तिष्क में उपजती है।

[illegible] युग में साहित्य का निर्माण तत्युगीन परिस्थितियों की गोद में होता है, और यही परिस्थितियाँ आलोचना पद्धति की निर्मिति भी करती है। जब एक समय विशेष या कालखण्ड में आलोचना का आधार कोई

Paper Code

प्रवृत्ति या विचारधारा प्रगतिमान होती है, वहीं से एक नयी पद्धति का निर्माण होता है।

हिंदी साहित्य में आलोचना की विभिन्न पद्धतियों का प्रचलन रहा है यथा-

- संस्कृत काव्यशास्त्र पद्धति
- पाश्चात्य आलोचना पद्धति
  - सैद्धांतिक पद्धति
  - व्यवहारिक पद्धति

इत्यादि।

उपरोक्त पद्धतियों के अंतर्गत समय-समय पर आलोचना के माध्यम से साहित्य को नयी दिशा मिलती रही है।

Do Not Write anything in this Portion

1(B)

आलोचना का अर्थ और स्वरूप -

जब समीक्षक / साहित्यकार किसी रचना को गुण - दोष विवेचना की दृष्टि से भली प्रकार से निरीक्षण करता है; वह प्रक्रिया आलोचना कहलाती है।

'लोच' संस्कृत धातु रूप से उपजी आलोचना वस्तुतः में हर प्रकार से एक संतुलित दृष्टिकोण की मांग करती है।

आलोचना के अर्थ में 'सम' उपसर्ग को जोड़ दिया जाता है, तब यह और अधिक व्यापक रूप ग्रहण कर लेता है -

सम + आलोचना = समालोचना

स्वरूप ⇒ आलोचना अपने वास्तविक स्वरूप में दोष विवेचना है; एवं यही स्वरूप प्रारम्भिक समय में दीखता भी आया है।

परंतु जब आलोचना के इतिहास के समग्र स्वरूप को देखते हैं तब 'सम' उपसर्ग लगाकर वास्तविक अर्थ प्रकट होता; जिस अर्थ है

Paper Code

ठीक उत्तर की आलोचना अर्थात ऐसी आलोचना जिसमें मात्र दोषों की विवेचना ही नहीं है, अपितु गुण एवं प्रशंसा का पुट भी है।

दोष विवेचन → आलोचना

गुण एवं दोष विवेचना → समालोचना

यथासमय इनका स्वरूप जैसे-2 युग की विचारधारा के साथ परिवर्तनमय होता रहता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

5

1(c)

भारतेन्दुयुगीन हिन्दी आलोचना पर टिप्पणी -

हिंदी के आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेंदुयुग के साथ होता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के जन्म के साथ-ही भारतेंदु युग का उद्भव भी माना जाता है। भारतेंदु युग वास्तव में आधुनिक हिंदी गद्य का जन्मकाल है।

इससे पूर्व हिंदी साहित्य में पद्य ही प्रधान था। आलोचना एवं गद्य का जन्म भारतेंदु युग में मिला। खड़ीबोली में गद्य रचना भारतेंदु युग से प्रारम्भ हुई।

आलोचना के अंकुर तब भारतेंदु युग की साहित्य भूमि पर प्रस्फुटित हो रहे थे, तब यह अंकुर अपने अंतर्विरोधों में ही उलझे थे। भारतेंदु का युग संक्रमण काल था; जहाँ पर अंग्रेजों की वास्तविक चाल को साहित्यकार समझ पाने में समय लग रहे थे। अनुगामी साहित्यकारों ने राजभक्ति को लिखा तो वहीं कुछ ने और आगे

Do Not Write anything in this Portion

जाकर लिखा—
"पूरी अमी की कटोरिया सी
चिरजीवी रहो विक्टोरिया रानी।"

धीरे-धीरे स्थिति स्पष्ट हुई और मुकरनी के माध्यम से भारतेन्दु ने लिखा—

"भीतर-भीतर सब रस चूसै,
बाहर से तन-मन-धन मूसै;
जाहिर बातन में अति तेज
क्यों सखी साजन, ना अंगरेज।"

इसी प्रकार गद्य रचनाओं में भी आलोचना के स्वर मिले।

1(D)

शास्त्रीय आलोचना

• साहित्य आलोचना के क्षेत्र में अनेक प्रकार के निरीक्षणों से अनुप्राणित है। अलग-अलग निरीक्षण की पद्धतियां साहित्य में अलग प्रकार के तत्वों की विवेचना करते हैं। जिन साहित्य रचनों में कालजयी सर्जना की अभिव्यक्ति हुई, वे प्रारम्भिक ग्रंथ शास्त्रीय कहलाये।

प्रकारान्तर में इन शास्त्रीय ग्रन्थों में जिन-जिन समान गुणों का परिपाक हुआ वही शास्त्रीय आलोचना के आधार बन गए यथा—

- ग्रंथ प्रकार
- अलंकार योजना
- रस परिपाक
- छन्द योजना

जब इन्हीं तत्वों के आधार पर किसी साहित्य को शास्त्रीय कसौटी पर जाँचा जाता है, तब आलोचना परम्परागत रूप में शास्त्रीय कहलाता है।

शास्त्रीय साहित्य स्वयं की सोपानों की श्रेणी में सर्वोच्च अवस्थिति रहते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

1 (E)

व्यक्तिवादी आलोचना -

आलोचना के विविध रूपों के अंतर्गत व्यक्तिवादी आलोचना भी अपना स्थान बनाकर रखती है।

इस प्रकार की आलोचना में साहित्यकार / आलोचक अपने विचारों को किसी सामान्य या युग स्वीकृत ढाँचे में ना बाँधकर ; व्यक्तिगत सोच के आधार पर रखता है।

व्यक्तिवादी आलोचना दो स्तम्भों पर टिकी होती है-

- कृतिकार
- समीक्षक

इन दोनों के व्यक्तित्व का टकराव या साम्य व्यक्तिवादी समीक्षा में परिलक्षित होता है। व्यक्तिवादी समीक्षकों को कई बार 'तद्दिमर्ग का रही' भी कह दिया जाता है। आलोचना के इस स्वरूप में कृतिकार का समीक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव ही दृष्टिगोचर होता है।

Do Not Write anything in this Portion

L(F)

रसवाद पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल के विचार -

1929 में हिंदी साहित्य का इतिहास नामक ग्रंथ लिखकर साहित्य के क्षेत्र में प्रकाश स्तंभ के समान स्थापित रामचंद्र शुक्ल रसवाद के परिपाक माने जाते हैं। शुक्ल जी ने रसवाद अपने विभिन्न विचारों को को कुछ इस प्रकार विभाजित किया है।

- भाव
- अनुभाव
- विभाव
- उद्वेग
- परिपाक

शुक्ल जी रस को शास्त्रीय आदर्शों में ढालकर रखते हैं, एक लोकमंगलकारी भावनों व काव्य की श्रेष्ठता स्थापित करते हैं। शुक्ल जी स्वयं एवं रसवादी आलोचक हैं; 'गोस्वामी तुलसीदास' 'जायसी ग्रन्थावली की भूमिका' 'भ्रमरगीत सार' आदि ग्रंथों की भूमिका में उन्होंने लोकसमन्वयकारी रसवाद की श्रेष्ठता पर बल दिया है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

1(G)

शुक्लोत्तर हिंदी आलोचना -

आचार्य शुक्ल ने आलोचना के जिस आदर्श, नैतिक स्वरूप की रचना अपने चरमोत्कर्ष में की थी; वह आगे के समय में बदल गई।

शुक्ल जी ने छायावाद को अपेक्षित संबल नहीं दिया तो यह कार्य नंददुलारे वाजपेयी सरीखे समीक्षकों ने किया।

शुक्लोत्तर युग में व्यक्तिगत / छायावादी से प्रभावित रचनाकारों ने नवीन आलोचना में मानव एवं प्रकृति जैसे तत्वों को प्रमुखता प्रदान की। ये बंधे हुए नियमों में न रहकर नयी गाथा लिखते जाते। (1918 - 1936) का यह समय एक नयी साहित्य सृजन की धारा ले आया। जहाँ स्वच्छंदतावाद जैसी धाराएं भी प्रस्फुटित हुईं।

अनुभूति की अभिलाषाएं एवं मानवतावादी दृष्टिकोण भी खूब फलित हुआ।

Paper Code

L(H)

'नयी समीक्षा' पर संक्षिप्त टिप्पणी –

"परिवर्तन का चक्र सतत है,
चलता है चल जाने दो
आने वाले नये पथिक हैं,
थके हुए को जाने दो।"

'नयी समीक्षा' भी इसी भाव की ही अभिव्यक्ति है। इस धारा के समीक्षक इस आधार पर कार्य करते हैं कि जब,

" नित नए साहित्य का सृजन हो रहा है, तो समीक्षा के नए प्रतिमानों का क्यों नहीं?"

नये साहित्य को कसने के लिए कसौटी भी नयी ही चाहिए; अर्थात पुराने भाव - विभाव
दृष्टिकोण
भाषा - शिल्प
मिल - प्रतिमान
के स्थान पर परिष्कृत; रचना की उपयुक्तता के अनुरूप ही समीक्षा की पद्धति भी परिवर्तन की ओर चलती रहे; एवं साहित्य ... बोध स्वयं जमा रहे।

Do Not Write anything in this Portion

1(I)

आलोचक के प्रमुख दोष -

आलोचकों ने साहित्य के परिमार्जन में 'जीवनी शक्ति' की भूमिका की, किन्तु तथापि कुछ दोष दृष्टिगत होते हैं -

- परम्परागत दृष्टिकोण - आलोचक स्वयं को शास्त्रीय नियमों में बांधकर रचना की नवीनता का गला घोट देते हैं।
- व्यक्तिगत पूर्वाग्रह - कई बार स्वयं के आदर्श, व विचारधारा निष्पक्ष आलोचना में बाधा बनती है।
- सामाजिक दबाव - कई आलोचक सामाजिक दबाव के कारण; स्वानुभूति नहीं कह पाते।
- एकांगी दृष्टिकोण - आलोचक का एकांगिक दृष्टिकोण यथा भाषा, रस विधान रचना की समीक्षा को पंगु बना देता है।

Paper Code

13

खण्ड- ब

उत्तर सं० 4

हिंदी आलोचना की पद्धति एवं प्रकार –

हिंदी आलोचना पर आलोचना पद्धतियों का गहरा प्रभाव रहा ; इन्हीं पद्धतियों के माध्यम से समीक्षा का क्रम आगे बढ़ता आया है।

कई बार हिंदी आलोचना पर यह दबाव या आरोप बनाया जाता है कि यह स्वयं में कोई आलोचना पद्धति न होकर पाश्चात्य आलोचना की नकल है। प्लेटो के अनुसार ; "नकल हेय है।" अर्थात हिंदी आलोचना को कमतर दिखाने का प्रयास किया जाता रहा है। हिंदी संस्कृत से जन्मी है, और संस्कृत में आलोचना की कई पद्धतियां शास्त्रार्थ आदि के रूप में वैदिक वाङ्मय में स्पष्ट रूप से मिलती रही हैं। इनका हिंदी आलोचना पर भी प्रभाव पड़ा है, संस्कृत की आलोचना पद्धतियां अधोलिखित हैं –

Do Not Write anything in this Portion

संस्कृत आलोचना पद्धति -

- टीका पद्धति
- सूक्ति पद्धति
- लोचन पद्धति
- आचार्य पद्धति
- शास्त्रार्थ पद्धति
- खण्डन पद्धति

रचित ग्रन्थों पर अन्य साहित्यकार इस प्रकार की पद्धतियों से समीक्षा करते आए है।

इनका सीधा प्रभाव हिंदी आलोचना पर पड़ा है। साथ ही इनका रुप में पाश्चात्य का भी एक पूरा पक्ष दृष्टिगोचर होता है; जहाँ यह अपने पूरे विस्तृत रुप को दृष्टि देता है।

पाश्चात्य समीक्षा पद्धति -

यूनान एवं ग्रीक सभ्यता की गोद में उत्पन्न होमर के इलियड तथा ओडेसी ने पाश्चात्य समीक्षा की पृष्ठभूमि को मजबूत किया समीक्षा या मतकर्यो की यह पृष्ठभूमि

काफी पुरानी है, परंतु होमर के समय से यह अधिक प्रामाणिक रूप में प्राप्त होती है।

पाश्चात्य समीक्षा का भी प्रभाव हिंदी आलोचना पर पड़ा है, एवं यह आलोचना पद्धतियाँ इस प्रकार है –

1. सैद्धान्तिक समीक्षा
2. निर्णयात्मक समीक्षा
3. प्रभावाभिव्यंजक समीक्षा
4. व्याख्यात्मक समीक्षा
   - (अ) ऐतिहासिक
   - (ब) तुलनात्मक
   - (स) वदोन्मुखी
     - (i) प्रगतिवादी
     - (ii) मनोविश्लेषणवादी

जब सिद्धांतों के आधार पर कोई रचनाकार किसी कृति की समीक्षा करता है, तब यह सैद्धांतिक समीक्षा कहलाती है।

जब इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर निर्णय निकालकर रचनाकार पर टिप्पणी की जाती है, तब

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

निर्णयात्मक समीक्षा का रूप ग्रहण कर लेती है।

इसी प्रकार समीक्षा पद्धतियों में → स्वच्छंदतावाद
→ मार्क्सवाद
→ मनोविश्लेषणवाद (फ्रायड)
इत्यादि ने भिन्न प्रकार की पद्धतियों / दृष्टिकोणों से साहित्य की समीक्षा की है; एवं साहित्य की धारा को परिमार्जित व परिष्कृत किया है।

Paper Code

17

खण्ड-स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर सं० 6

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के समीक्षात्मक मानदण्ड -

1839 में गार्सा-द-तासी के 'इस्तवार-द-ला-लितेरेतुर-एंदुई-एंदुस्तानी' के फ्रेंच भाषा में इतिहास लेखन के साथ; हिंदी भाषा के लिए इतिहास व समीक्षा का प्रारम्भ हुआ।

1883 - 'शिवसिंह सरोज'
1888 - माडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर आफ हिंदुस्तान
1913 - मिश्रबंधु विनोद
एवं 1929 में - 'हिंदी साहित्य का इतिहास' - रामचन्द्र शुक्ल के द्वारा

एक नये युग 'शुक्ल युग' का सूत्रपात हुआ; जिन्होंने हिंदी गद्य एवं आलोचना को नई ऊंचाइयों पर

Do Not Write anything in this Portion

पहचानें का कार्य किया।
आचार्य शुक्ल ने आलोचना एवं समीक्षा के क्षेत्र में बहुत कार्य किया है। जो इस प्रकार अधोलिखित है –

- भ्रमरगीत सार
- गोस्वामी तुलसीदास
- जायसी ग्रन्थावली
- चिंतामणि भाग - 1
- चिंतामणि भाग - 2
- सूरदास का सिंह-वर्णन
- बिहारी दोहावली
- त्रिवेणी (सूर, तुलसी एवं जायसी की तुलनात्मक विवेचना)

इन सभी ग्रन्थों में शुक्ल जी की अद्भुत समीक्षात्मक दृष्टि देखने को मिलती है, जिसके माध्यम से शुक्ल जी ने आलोचना के क्षेत्र में युगपरिवर्तनकारी कार्य किया। समीक्षात्मक मापदंडों के रूप में शुक्ल जी के मापदंड

अधोलिखित वर्णित हैं—

लोक मंगलकारी साहित्य —

शुक्ल जी की समीक्षा के केंद्र में लोक मंगल सदैव केंद्र में रहा है; यही कारण है कि शुक्ल जी गोस्वामी तुलसीदास को सर्वोच्च स्थान देते हैं।

रस सिद्धांत —

शुक्ल जी एक रसवादी आलोचक हैं तथा भाव-विभाव-अनुभाव के परिपाक में सर्वमयी एवं कल्याणमयी रस परिपाक के पक्षधर हैं।

अलंकार योजना —

आचार्य शुक्ल जी ने अलंकार को सदैव कविता का साधन मात्र माना है। वे कहते हैं कि "कविता के लिए अलंकार साधन मात्र है, साध्य नहीं है।"

कविता का समाज से सम्बन्ध -

शुक्ल जी ने कविता का समाज से अनन्य संबंध बतलाते हुए काव्य को लोकहितकारी एवं समाज से

Do Not Write anything in this Portion

अनुरागपूर्ण तारतम्य कायम को कहा है।

आदर्श एवं शास्त्रीय —

शुक्ल जी शास्त्रीय समीक्षा के आदर्शों से प्रभावित थे; वह साहित्यकार को नियमित आदर्शों से प्रेरित करने की चेष्टारत रहते थे।

भाषा एवं शिल्प —

भाषा एवं शिल्प में शुक्ल जी परिष्कृत संस्कृत निष्ठ हिंदी को वरीयता देते थे। भाषा की सशक्त अभिव्यक्ति साहित्यकार की क्षमता सिद्ध करती है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहना गलत न होगा कि शुक्ल जी पारसमणी के समान हिंदी को स्वर्णमय करने में हर प्रकार समर्पित रहे तथा आज तक वह हिंदी के आकाश में प्रकाशमान नक्षत्र के समान प्रकाशित एवं स्थापित है।

Paper Code

21

Paper Code

22

Do Not Write anything in this Portion

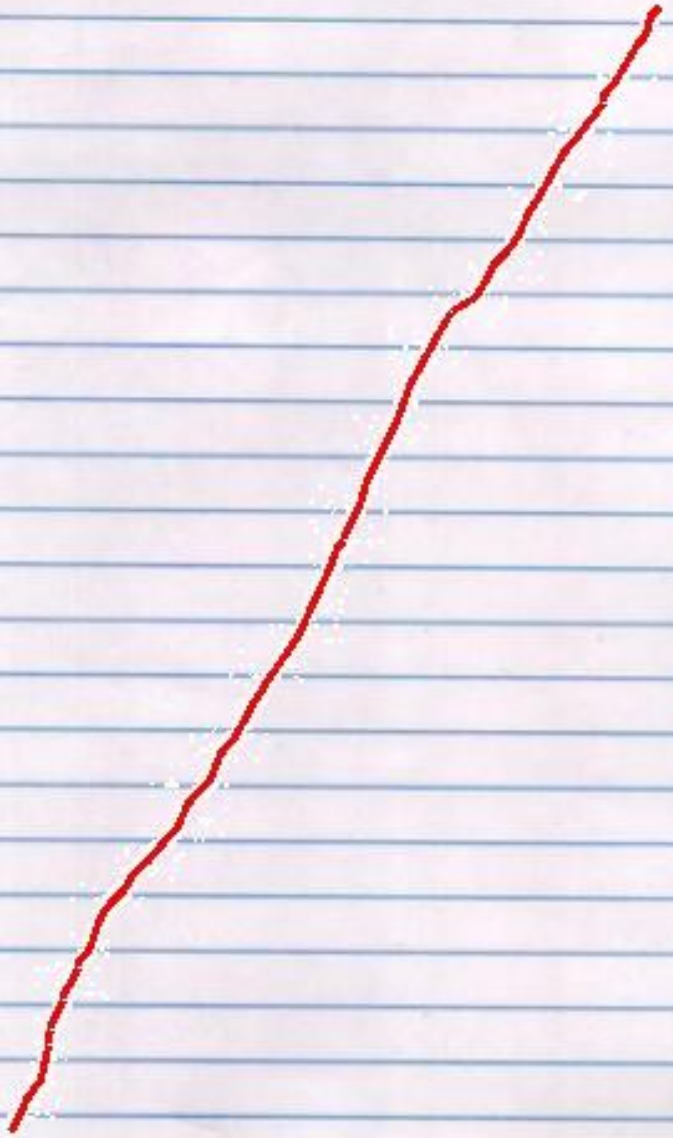

Paper Code

23

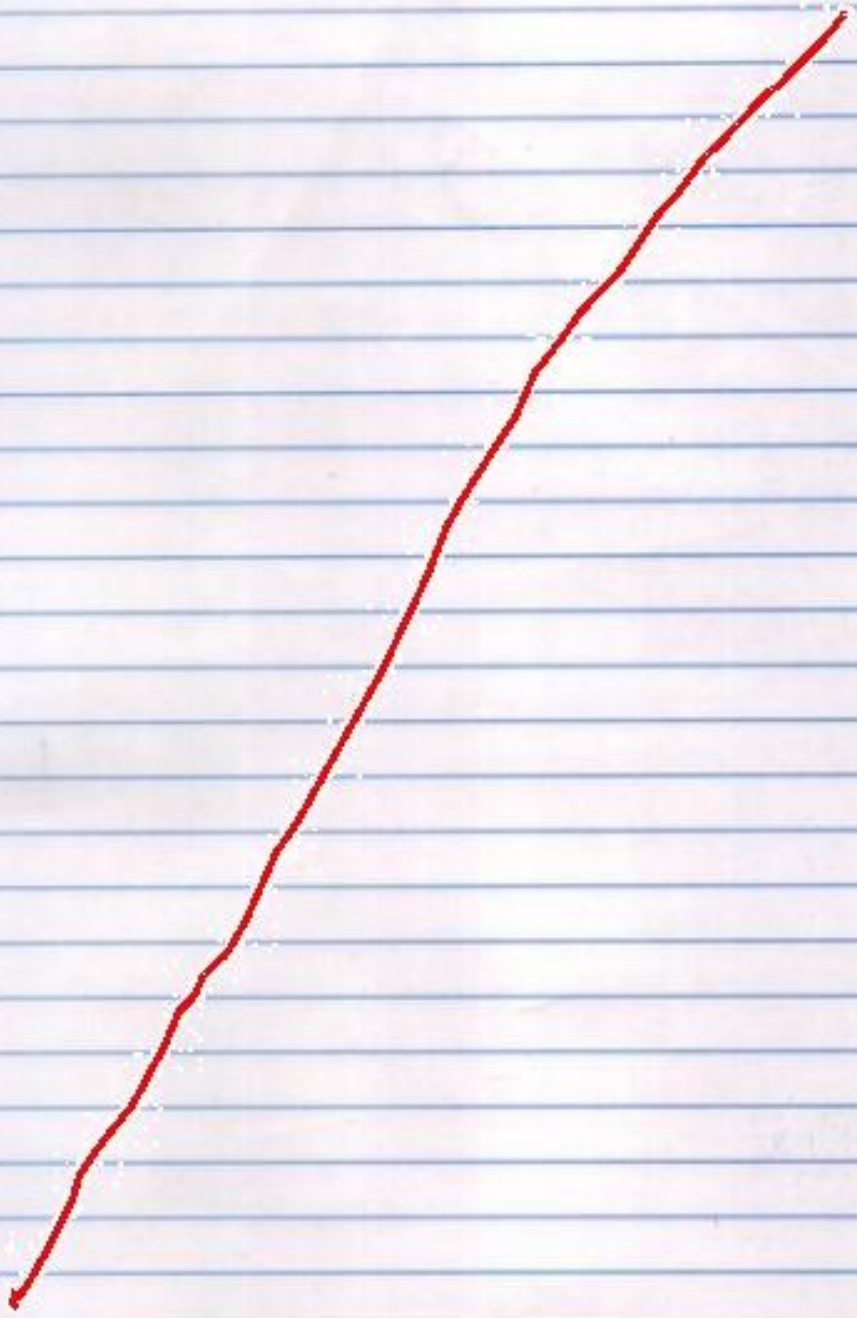

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Room No 21

M.A. Hindi

Register- 06